

## त्रिआयाम सिद्धान्त

इस सिद्धान्त के प्रतिपादक जे. पी. गिल्फोर्ड (J. P. Guilford) हैं। उन्होंने अपने परीक्षणों द्वारा यह प्रतिपादित करने की चेष्टा की है कि व्यक्ति की किसी भी मानसिक प्रक्रिया या बौद्धिक कार्य को तीन आधारभूत आयामों में बाँटा जा सकता है—

1. Operation (सक्रिया)
2. सूचना सामग्री या विषय वस्तु (Content)
3. उत्पाद (Products)

संक्रिया — संक्रिया से तात्पर्य व्यक्ति द्वारा की जानेवाली मानसिक प्रक्रिया के स्वरूप से होता है। गिलफीर्ड ने संक्रिया के आधार पर मानसिक क्षमताओं को 5 भागों में बाँटा है —

- (a) मूल्यांकन (Evaluation)
- (b) अभिसारी चिंतन (Convergent thinking)
- (c) अपसारी चिंतन (Divergent thinking)
- (d) स्मृति (Memory)
- (e) संज्ञान (Cognition)

विषयवस्तु — इस आधाम से तात्पर्य उस क्षेत्र से होता है जिसके सूचनाओं के आधार पर संक्रियाएँ की जाती हैं।

उत्पादन — इस आधाम से तात्पर्य किसी विशेष प्रकार की विषय-वस्तु

द्वारा की गई संक्रिया का परिणाम से होता है। इस तरह के परिणाम को गिल्फोर्ड ने 6 भागों में बाँटा है, जो इस प्रकार हैं —

- (a) आशय (Unit or U)
- (b) वर्ग (classes)
- (c) सम्बंध (relations)
- (d) पद्धतियाँ (systems)
- (e) स्थानांतरण (Transformations)
- (f) आशय (Implications)

इस तरह से स्पष्ट है कि गिल्फोर्ड ने अपने सिद्धांत में बुद्धि की व्याख्या तीन आयामों (dimensions) के आधार पर की है। प्रत्येक आयाम के कई डायरेक्शन हैं।

## 2. संक्रियाएँ (Operations)

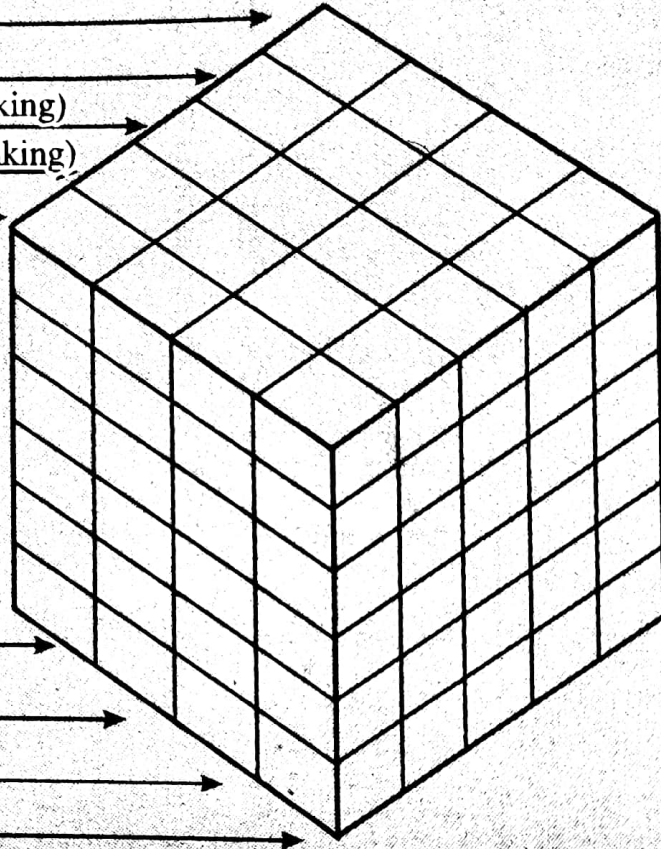
संज्ञान (Cognition)

स्मृति (Memory)

परम्परागत चिंतन (Convergent Thinking)

गैरपरम्परागत चिंतन (Divergent Thinking)

मूल्यांकन (Evaluation)



## 1. विषय-वस्तु (Content)

चित्रात्मक (Figural)

सांकेतिक (Symbolic)

शाब्दिक (Semantic)

व्यवहारिक (Behavioural)

## 3. उत्पाद (Product)

इकाइयाँ (Units)

वर्ग (Classes)

सम्बन्ध (Relation)

प्रणाली (System)

प्रत्यावर्तन (Transformation)

निहितार्थ (Implication)

चित्र 7—त्रिआयाम सिद्धान्त